मंजूनाथ भंडारी

विश्व नागरिक

ऋचा वर्मा

वर्ष 2001 में 9/11 के आंतकी हमले से 24 घंटे पहले मंजूनाथ भंडारी वाशिंगटन डी.सी.में पेंटागन कार्यालय में अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के अधिकारियों से चर्चा कर रहे थे। चर्चा का विषय था: आए-दिन हो रहे आंतकी हमले किस तरह भारत के सामाजिक व भावनात्मक ताने-बाने को तार-तार कर रहे हैं।

भंडारी कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव हैं। वह भिन्न संस्कृतियों के बीच बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लिए शुरू किए गए अंतरराष्ट्रीय आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत ''अमेरिकन काउंसिल ऑफ यंग पॉलिटिकल लीडर्स' के साथ अपने अनुभव की शुरुआत कर रहे थे। अगले दो सप्ताहों में उन्होंने अमेरिका का दौरा करते हुए ''भिन्न जातीय और नस्लीय आधार के होते हुए भी उस दुख में लोगों की एकता की अनूठी झलक देखी।'' इसने दक्षिण भारत के एक खेतीबाड़ी वाले गांव में जन्मे और दुनिया भर में सैर करने वाले 46 वर्षीय भंडारी को भाव-विह्वल कर दिया।

अपनी राजनीतिक गतिविधियों के अलावा वह भंडारी फ़ाउंडेशन के जरिए एच आइ वी/एड्स तथा नशीली दवाओं से मुक्ति के लिए चलाए जाने वाले प्रमुख जागरूकता अभियानों को आर्थिक मदद देते हैं और इन्हें प्रायोजित करते हैं। वर्ष 2002 में बार्सीलोना, स्पेन में आयोजित विश्व एड्स सम्मेलन में भाग लेने के बाद वह एच आइ वी/एड्स से संबंधित गतिविधियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गए। वह कहते हैं, ''इस बीमारी के कारण अपने छह बच्चों को खो देने वाली एक महिला की आपबीती सुनकर बिल क्लिंटन तथा नेल्सन मंडेला जैसे विश्व स्तर के राजनेताओं की आंखें भर आईं। मैंने तभी निश्चय कर लिया था कि मुझे इस दिशा में रचनात्मक काम करना है।''

भंडारी ने बचपन में अपनी पढ़ाई एक झोंपड़ीनुमा गोशाला में की जिसमें सुबह के समय स्कूल चलाया जाता था। ''पहली कक्षा के बच्चे सबसे आगे की कतार में बैठते थे और बाकी बच्चे उम्र के हिसाब से उनके पीछे। सातवीं कक्षा तक हमें एक ही अध्यापक पढ़ाता था। मीलों दूर तक कोई दूसरा स्कूल नहीं था। केवल छत ही हमें धूप और बारिश से बचाती थी।'' भंडारी कर्नाटक में शिमोगा जिले के अगासनहल्ली गांव में बीते अपने बचपन को बड़ी विनम्रता से याद करते हुए कहते हैं।

जब वह आगे की पढ़ाई के लिए मेंगलूर गए तो उनमें नेतागिरी का शौक जन्म ले चुका था। उन्होंने कॉलेज तथा विश्वविद्यालय में छात्र संघ के चुनाव लड़े। वर्ष 1980 में भंडारी ने कांग्रेस पार्टी में शामिल होकर औपचारिक रूप से अपने राजनीतिक कॅरियर की शुरुआत की। उन्हें युवा राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित करने तथा बुनियादी स्तर पर पार्टी का प्रचार करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई।

सद्भावना तथा नेतृत्व अभियानों के अंतर्गत लगभग 50 देशों की यात्रा करने के बाद भी भंडारी शिक्षा के लिए समय निकाल लेते हैं। उन्होंने इंजीनियरी में बैचलर डिग्री हासिल की है और खेलकूद में भी सक्रिय भाग लेते हैं। वह मदुरै कामराज यूनिवर्सिटी, तमिलनाडु से राजनीतिशास्त्र में अपनी एम.फिल. की पढ़ाई पूरी कर रहे हैं।

भंडारी को वर्ष 2004 में आइजनहावर फ़ेलोशिप मिली जिसके तहत उन्होंने अमेरिका का दो माह का दौरा किया और वहां मेरीलैंड, मिसिसिपी, पैंसिल्वेनिया, नेवादा तथा वाशिंगटन सहित 22 राज्यों में राज्यस्तरीय तथा नगर निकाय प्रतिनिधियों से भेंट की। वह कहते हैं, ''इस शोधवृत्ति के कारण मुझे स्वयं यह जानने का मौका मिला कि अमेरिकी राजनेता किस प्रकार अपने कर्मियों का नेतृत्व करते हैं, निर्वाचकों की बातों पर कैसे अमल करते हैं और कैसे धन एकत्र करते हैं।'' वर्ष 2004 के बाद भंडारी सिंगापुर, श्रीलंका, चीन तथा तुर्की में पेंसिल्वेनिया से संचालित आइजनहावर फ़ेलोशिप के चार नेटवर्क कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं।

इस कार्यक्रम ने उनके सोच का तो विस्तार किया ही, उच्च शिक्षा प्रणाली, स्वास्थ्य रक्षा तथा ग्रामीण कृषि में भी उनकी रुचि जाग्रत की। वह कहते हैं, ''अमेरिका में कृषि के क्षेत्र में मशीनीकरण के स्तर और कृषि यंत्रों की प्रौद्योगिकी में प्रगति को देखकर मैं चकित रह गया।''

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

साभार: मंजूनाथ भंडारी

बाएं से: न्यू यॉर्क सिटी में वर्ष 2006 में 26 वीं वार्षिक भारतीय स्वतंत्रता दिवस परेड के मौके पर अभिनेत्री अमीषा पटेल, मंजूनाथ भंडारी और अभिनेत्री पूनम ढिल्लों। भंडारी इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थे।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

अमेरिकन काउंसिल ऑफ़ यंग पॉलिटिकल लीडर्स
http://www.acypl.org/

आइज़नहावर फ़ेलोशिप
http://eisenhowerfellowships.org/